

डॉ. सुधा शर्मा आर्या
बलिया उत्तर प्रदेश

लिव इन रिलेशन

अनंत सुख की चाह में,
स्वतंत्रता की राह में,
नव विचार मिल गया संस्कार हिल गया,
कर्तव्यपथ बिसर गया अधिकार निखर गया।
नभपुष्प मिल गया,लिव इन रिलेशन खिल गया ।

सोचा पहले साथ हो व्यवहार की जांच हो,
तत्पश्चात विवाह का सांस्कृतिक व्यवहार हो,
शूल से कोई घाव न हो रिश्तों का भाव न हो,
दो मानव का जीवन हो अन्य कोई छांव न हो,
भाव यह प्रखर हुआ,
बाकि सब बिसर गया,
नैतिकता की राह में शूल सा मगर भया ।
संकल्प यह दृढ़ हुआ,
मन पूर्ण विश्वस्त हुआ,
नव रीति गढ़ कर मन फिर प्रसन्न भया।
दृढ़ता में ढल गया,लिव इन रिलेशन खिल गया।

मान्यता बेकार थी नई किरण मिल गई,
सहनशक्ति गुम गई इगो हर्ट हो गई,
पुष्प भरी क्यारियां अंगार में बदल गई,
कानून साथ था,मित्रता सब पिंघल गई
धन की कोई कमी नहीं,
संस्कारों की नमी नहीं,
नई शिक्षा की रोशनी धर्म की कोई जमीं नहीं,
मन अहम् से चूर-चूर,
आधुनिकता का गुरूर,
मन में रोष कौंध गया परंपरा पर क्षोभ भया।
सोल्यूशन मिल गया लिव इन रिलेशन खिल गया।

विवाह अब शूल था व्यर्थ और फिजूल था,
संतान के नाम पर विचार न अब कबूल था,
व्यर्थ की जिम्मेदारियां जीवन सम बबूल था,
जीवन के आनंद में कंटक से परिपूर्ण था,
मस्ती की बयार में,
जीवन सुख की आस में,
विवाह गौण हो गया , समाज मौन हो गया,
अस्तित्व का मलाल था,
प्रतिष्ठा का सवाल था,
सामाजिक दायित्व भूल गया लक्ष्य निर्मूल भया
स्वान्त: सुखाय में, लिव इन रिलेशन खिल गया